Muharram Ke Fazaail (Hindi)

मुहर्रम के फ़ज़ाइल

सफ़हात 17

मुहर्रम के पहले अशरे की अज़मत	04
आशूरा का रोज़ा मग़्फ़िरत का सबब बन गया	07
नए साल व महीने की दुआ	07
जानवर भी एहतिराम करते हैं	09

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دار الفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**मुहर्रम के फ़ज़ाइल**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. **98987 32611** • E-mail : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

मुहर्रम के फ़ज़ाइल

दुआए अ़त्तार

या **अल्लाह** पाक ! जो कोई 17 सफ़ह़ात का रिसाला "मुह़र्रम के फ़ज़ाइल" पढ़ या सुन ले उस की करबला वालों के तुफ़ैल आफ़तों और बलाओं से ह़िफ़ाज़त फ़रमा । اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह करीम के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ लोगो ! बेशक बरोज़े क़ियामत उस की दह्शतों (Terrors) और ह़िसाब किताब (Accountability) से जल्द नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या में ब कसरत दुरूद शरीफ़ पढ़े होंगे ।[1]

उफ़ वोह रहे संगलाख़, आह ! येह पा शाख़ शाख़
ऐ मेरे मुश्किल कुशा ! तुम पे करोड़ों दुरूद[2]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

ख़ैराते आ़शूरा की बरकात

आ़शूरा (या'नी दस मुह़र्रमुल ह़राम) के रोज़ मुल्के "रै" में क़ाज़ी के पास एक फ़क़ीर (Poor) आ कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : मैं एक बहुत ग़रीब और इ़याल दार आदमी हूं आप को यौमे आ़शूरा का वासित़ा ! मेरे लिये

1...مسند الفردوس، ج5ص277حدیث8175، دار الکتب العلمیۃ بیروت

2... ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 266, मक्तबतुल मदीना

दस किलो आटा, पांच किलो गोश्त और दो दिरहम का इन्तिज़ाम फ़रमा दीजिये। क़ाज़ी (Judge) ने ज़ोहर के बा'द आने का कहा। जब फ़क़ीर वक़्ते मुक़र्ररा पर आया तो अ़स्र में बुलाया। वोह अ़स्र के बा'द पहुंचा फिर भी कुछ न दिया ख़ाली हाथ ही भेज दिया। फ़क़ीर का दिल टूट गया। वोह रन्जीदा रन्जीदा एक ग़ैर मुस्लिम के पास पहुंचा और उस से कहा : आज के मुक़द्दस दिन के सदक़े मुझे कुछ दे दो। उस ने पूछा : आज कौन सा दिन है ? तो फ़क़ीर ने आ़शूरा के कुछ फ़ज़ाइल बयान किये। जिसे सुन कर उस ने कहा : आप ने बहुत ही अ़ज़मत वाले दिन का वासित़ा दिया, अपनी ज़रूरत बयान कीजिये। फ़क़ीर ने उस से भी वोही ज़रूरत बयान कर दी। उस आदमी ने दस बोरी गन्दुम, सो सेर गोश्त और बीस दिरहम पेश करते हुए कहा : येह आप के अहलो इ़याल के लिये ज़िन्दगी भर हर माह इस दिन की फ़ज़ीलतो अ़ज़मत के वासित़े मुक़र्रर है। रात को क़ाज़ी साहि़ब ने ख़्वाब देखा कि कोई कह रहा है नज़र उठा कर देख ! जब नज़र उठाई तो दो आ़लीशान मह़ल (Palaces) नज़र आए, एक चांदी और सोने की ईंटों (Bricks) का और दूसरा सुर्ख़ याक़ूत का था। क़ाज़ी ने पूछा : येह दोनों मह़ल किस के हैं ? जवाब मिला : अगर तुम साइल की ज़रूरत पूरी कर देते तो येह तुम्हें मिलते मगर चूंकि तुम ने उसे (ख़ाली हाथ) लौटा दिया था इस लिये अब येह दोनों मह़ल फ़ुलां ग़ैर मुस्लिम के लिये हैं। क़ाज़ी साहि़ब बेदार हुए तो बहुत परेशान थे। सुब्ह़ हुई तो ग़ैर मुस्लिम के पास गए और उस से पूछा : कल तुम ने कौन सी "नेकी" की है ? उस ने पूछा : आप को कैसे इ़ल्म हुवा ? क़ाज़ी साहि़ब ने अपना ख़्वाब सुनाया और पेशकश की, कि मुझ से एक लाख दिरहम ले लो और कल की "नेकी" मुझे बेच दो। उस ग़ैर मुस्लिम ने कहा : मैं रूए ज़मीन की सारी दौलत ले कर भी उसे फ़रोख़्त नहीं करूंगा, **अल्लाह** पाक की रह़मतो इ़नायत बहुत ख़ूब है। येह कहने के बा'द वोह

कलिमा पढ़ कर मुसल्मान हो गया।[1]

''मुहर्रम'' कहने की वज्ह

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस्लामी साल का पहला महीना मुहर्रम है इस माहे मुबारक की हुरमत (या'नी ता'ज़ीम) की वज्ह से इसे ''**मुहर्रम**'' का नाम दिया गया है।[2] **अल्लाह** पाक ने इस्लामी साल का आग़ाज़ मुहर्रमुल ह़राम के बा बरकत महीने से फ़रमाया और हमें इस में अज्रो सवाब और ख़ैरो बरकत के कसीर मवाक़ेअ़ अ़ता फ़रमाए। बन्दए मोमिन के लिये अपना पसन्दीदा (बन्दा) बनने की राहें खोल दीं ताकि साल के शुरूअ़ ही से बन्दा अपने रब के क़रीब हो जाए और तौबा करे तो उस के गुनाह बख़्श दिये जाएं। नेकियों का असर बन्दे पर साल के इख़्तिताम तक रहे ह़त्ता कि साल का आख़िरी महीना ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम भी इ़बादत में गुज़रे, उम्मीद है कि उस के लिये पूरे साल की इत़ाअ़त लिखी जाए क्यूं कि जिस के अ़मल की इब्तिदा और इन्तिहा इ़बादत पर हो तो वोह उस के हुक्म में है जो दोनों वक़्तों के दरमियान भी इ़बादत में ही लगा रहा हो।[3]

इ़बादत में गुज़रे मेरी ज़िन्दगानी करम हो करम या ख़ुदा या इलाही [4]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

मुहर्रमुल ह़राम के 2 फ़ज़ाइल

(1) एक शख़्स हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और कर अ़र्ज़ की **: या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **!** रमज़ान

1...روض الریاحین ص275، دار الکتب العلمیة بیروت

2...تفسیر ابن کثیر، التوبة، تحت الآیة:36 ج4ص128، دار الکتب العلمیة بیروت

3...لطائف المعارف ص36، المکتبة العصریة بیروت

4... वसाइले बख़्शिश, स. 105, मक्तबतुल मदीना

के इ़लावा मैं किस महीने में रोज़े रखूं ? इर्शाद फ़रमाया : अगर तुम ने रमज़ान के बा'द किसी महीने के रोज़े रखने हों तो मुह़र्रम के रोज़े रखो कि येह **अल्लाह** पाक का महीना है, इस महीने में एक दिन है जिस में **अल्लाह** पाक ने एक क़ौम की तौबा क़बूल फ़रमाई और दूसरों की तौबा भी क़बूल फ़रमाएगा ।[1] **(2)** नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : माहे रमज़ान के बा'द सब से अफ़्ज़ल रोज़े **अल्लाह** पाक के महीने मुह़र्रम के रोज़े हैं और फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द सब से अफ़्ज़ल नमाज़ रात की नमाज़ है ।[2]

मुह़र्रम के पहले अ़शरे की अ़ज़मत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान नहदी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : सह़ाबए किराम तीन अ़शरों (10 days) की ता'ज़ीम किया करते थे : (1) रमज़ानुल मुबारक का आख़िरी अ़शरा (2) ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम का पहला अ़शरा (3) मुह़र्रमुल ह़राम का पहला अ़शरा ।[3]

यौमे आ़शूरा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस मुबारक माह में 10 मुह़र्रमुल ह़राम को ख़ुसूसी अहम्मिय्यत ह़ासिल है, इसे यौमे आ़शूरा के नाम से जाना जाता है । 10 मुह़र्रमुल ह़राम को आ़शूरा कहने की एक वज्ह येह भी है कि इस दिन **अल्लाह** पाक ने 10 अम्बियाए किराम को ए'ज़ाज़ो इक्राम से नवाज़ा ।[4]

यौमे आ़शूरा की मुबारक निस्बतें

यौमे आ़शूरा को अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام से ख़ुसूसी निस्बत ह़ासिल है : (1) यौमे आ़शूरा को ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह

1...مسند امام احمد، ج1ص327حدیث1334، دار الفکر بیروت 2...مسلم ص456حدیث2755، دار الکتاب العربی بیروت
3...لطائف المعارف ص36 4...فیض القدیر ج4ص394تحت الحدیث5365، دار الکتب العلمیۃ بیروت

عَلَيْهِ السَّلَام की मदद की गई और फ़िरऔन और उस के पैरौकार (Followers) इस में हलाक हुए। (2) हज़रते सय्यिदुना नूह़ नजिय्युल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام की कश्ती "जूदी पहाड़" पर ठहरी। (3) हज़रते सय्यिदुना यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام को मछली के पेट से नजात मिली। (4) हज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام की क़बूलिय्यते तौबा का दिन है। (5) हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام कूंएं से निकाले गए। (6) इसी दिन हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام की विलादत हुई और इसी दिन आप عَلَيْهِ السَّلَام को आस्मान पर उठाया गया। (7) आ़शूरा के दिन ही हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की तौबा क़बूल हुई। (8) हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام की इसी दिन विलादत हुई। (9) हज़रते सय्यिदुना या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام की बीनाई की कमज़ोरी इसी दिन दूर हुई। (10) हज़रते सय्यिदुना इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام को आस्मान पर उठाया गया। (11) इसी रोज़ **अल्लाह** पाक ने हज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام की आज़्माइश दूर फ़रमाई। (12) यौमे आ़शूरा को ही हज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام को बादशाहत अ़ता हुई।[1]

ईद का दिन

येह दिन बनी इसराईल की ईद का दिन था। रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام आ़शूरा के दिन कत्तान के कपड़े पहनते और इस्मिद सुरमा लगाया करते थे।[2]

अ़ह्दे रिसालत और यौमे आ़शूरा

ज़मानए जाहिलिय्यत में क़ुरैश यौमे आ़शूरा का रोज़ा रखते,

1...عمدۃ القاری ج8ص233، دار الفکر بیروت 2...لطائف المعارف ص57

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी इस दिन का रोज़ा रखते थे[1] और इसी दिन का'बतुल्लाह शरीफ़ का ग़िलाफ़ तब्दील किया जाता।[2]

ख़ैबर और मदीनए मुनव्वरह में यहूदियों की बहुत बड़ी ता'दाद आबाद थी, चूंकि इन का तअ़ल्लुक़ बनी इसराईल से था और बनी इसराईल ने यौमे आ़शूरा ही को फ़िरऔ़न से नजात पाई थी लिहाज़ा इस दिन को बतौ़रे ईद मनाया करते और रोज़ा रखा करते।[3]

जब नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीनए पाक तशरीफ़ लाए तो आप ने देखा कि यहूदी भी आ़शूरा के दिन रोज़ा रखते हैं, आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा : आज के दिन रोज़ा क्यूं रखते हो ? यहूदियों ने अ़र्ज़ की : "येह अ़ज़मत वाला दिन है, येह वोह दिन है जिस में **अल्लाह** पाक ने बनी इसराईल और ह़ज़रते मूसा को (उन के दुश्मन फ़िरऔ़न से) नजात दी तो ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने शुक्राने में इस दिन का रोज़ा रखा था और हम भी इस दिन का रोज़ा रखते हैं।" रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हम मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के तुम से ज़ियादा ह़क़दार हैं।" चुनान्चे आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस दिन रोज़ा रखा और लोगों को रोज़ा रखने का हुक्म इर्शाद फ़रमाया।[4]

आ़शूरा का रोज़ा फ़र्ज़ था

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! शुरूअ़ में आ़शूरा का रोज़ा मुसल्मानों पर फ़र्ज़ था फिर रोज़ए रमज़ान से इस की फ़र्ज़िय्यत मन्सूख़ (Abrogate) हो गई थी।[5] अब आ़शूरा का रोज़ा रखना फ़र्ज़ नहीं मगर

1...بخاری ج1ص656حدیث2002، دارالکتب العلمیۃ بیروت 3...لطائف المعارف ص57-58ملخصاً

2...بخاری ج1ص536حدیث1592 4...مسلم ص441حدیث2658،ملتقطاً

5... मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3, स. 180, ज़ियाउल क़ुरआन पब्लीकेशन्ज़, लाहोर

इस दिन का रोज़ा रखने वाले के लिये बड़ा सवाब है।

दो फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : (1) "मुझे **अल्लाह** पाक पर गुमान है कि आ़शूरा का रोज़ा एक साल पहले के गुनाह मिटा देता है।"[1] (2) आ़शूरा का रोज़ा एक साल के रोज़ों के बराबर है।[2]

एक दिन पहले या एक दिन बा'द

मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : आ़शूरा के दिन का रोज़ा रखो और इस में यहूदियों की मुख़ालफ़त करो, आ़शूरा के दिन से पहले या बा'द में एक दिन का रोज़ा रखो।[3]

सह़ाबी इब्ने सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को किसी दिन के रोज़े को और दिन पर फ़ज़ीलत दे कर जुस्तजू (seek) फ़रमाते न देखा मगर येह कि आ़शूरा का दिन और येह कि रमज़ान का महीना।[4]

आ़शूरा का रोज़ा मग़्फ़िरत का सबब बन गया

एक आ़लिम साह़िब को ख़्वाब में देखा गया, देखने वाले ने ह़ाल पूछा, फ़रमाया : 60 साल तक आ़शूरा का रोज़ा रखने की बरकत से मेरी मग़्फ़िरत हो गई। एक रिवायत में येह है कि आ़शूरा और एक दिन पहले और बा'द का रोज़ा रखने की बरकत से।[5]

यौमे आ़शूरा का एह़तिराम जानवर भी करते हैं

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आ़शूरा ऐसा मुबारक दिन है कि

1...مسلم ص454 حدیث2746 ملتقطاً
2...مسند احمد ج8 ص381 حدیث22679
3...مسند احمد ج1 ص518 حدیث2154
4...بخاری ج1 ص657 حدیث2006
5...لطائف المعارف ص57

इन्सान तो इन्सान चरिन्दो परिन्द (Birds and Animals) ह़त्ता कि वह़शी जानवर भी इस का एह़तिराम करते हैं और इस दिन की ता'ज़ीम करते हुए रोज़ा भी रखते हैं।

बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِم के चन्द आंखों देखे वाक़िआत, तजरिबात और इर्शादात पढ़िये : (1) अ़ज़ीम ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन इ़बाद رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुझे येह बात पहुंची है कि वह़शी जानवर दस मुह़र्रम का रोज़ा रखते थे।[1] (2) ह़ज़रते सय्यिदुना फ़त्ह़ बिन शख़रफ़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं रोज़ाना च्यूंटियों के लिये रोटी तोड़ कर डालता था, जब दस मुह़र्रम का दिन आता तो च्यूंटियां (Ants) उसे न खातीं।[2] (3) ह़ज़रते अबुल ह़सन अ़ली बिन उ़मर क़ुज़वैनी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : दस मुह़र्रम को च्यूंटियां भी रोज़ा रखती हैं।[3] (4) अ़ब्बासी ख़लीफ़ा अल क़ादिर बिल्लाह के साथ भी येही मुआ़मला पेश आया तो उसे बहुत ह़ैरत हुई, उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन क़ुज़वैनी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से इस बारे में पूछा तो उन्हों ने फ़रमाया : 10 मुह़र्रम के दिन च्यूंटियां रोज़ा रखती हैं।[4] (5) ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने नासिरुद्दीन दिमश्क़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه (वफ़ात : 842 हि.) लिखते हैं : 10 मुह़र्रमुल ह़राम को एक शख़्स गाउं आया, लोग उस वक़्त जानवर ज़ब्ह़ कर रहे थे, उस ने वज्ह पूछी तो गाउं वालों ने बताया : "आज वह़शी जानवर (Beasts) रोज़े से हैं, हमारे साथ चलो हम तुम्हें दिखाते हैं।" उन्हों ने उस आदमी को एक बाग़ में ले जा कर खड़ा कर दिया उस का बयान है : अ़स्र के बा'द हर त़रफ़ से वह़शी जानवर आने लगे और बाग़ को घेर लिया, उन के सर आस्मान की त़रफ़ उठे हुए थे, किसी एक ने भी (उस गोश्त में से) कुछ

1...لطائف المعارف ص57 2...لطائف المعارف ص57۔ مجموع فیہ رسائل للحافظ ناصر الدین ص74، دار ابن حزم بیروت
3...مجموع فیہ رسائل للحافظ ناصر الدین ص74 4...لطائف المعارف ص57

नहीं खाया, जूं ही सूरज ग़ुरूब हुवा वोह वहशी जानवर गोश्त पर टूट पड़े और जल्दी से सब कुछ खा गए।[1]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

चांद की पहली रात की दुआ

हो सके तो हर माह चांद की पहली रात येह दुआ पढ़ लीजिये क्यूं कि जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चांद देखते तो येह दुआ पढ़ते थे : اَللّٰهُمَّ اَهِلَّهُ عَلَيْنَا بِالْيُمْنِ وَالْاِيْمَانِ وَالسَّلَامَةِ وَالْاِسْلَامِ رَبِّيْ وَرَبُّكَ اللّٰه۔[2]

नए साल व महीने की दुआ

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन हिशाम رَضِيَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं : नए साल या महीने की आमद पर सहाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) एक दूसरे को येह दुआ सिखाते थे : اَللّٰهُمَّ اَدْخِلْهُ عَلَيْنَا بِالْاَمْنِ وَالْاِيْمَانِ وَالسَّلَامَةِ وَالْاِسْلَامِ وَرِضْوَانٍ مِّنَ الرَّحْمٰنِ وَجَوَازٍ مِّنَ الشَّيْطَان۔[3]

तमाम तक्लीफ़ों और आफ़तों से हिफ़ाज़त

हज़रते शाह कलीमुल्लाह शाहजहांआबादी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो कोई 12 मरतबा येह दुआ :

''سُبْحٰنَ اللّٰهِ مِلْءَ الْمِيْزَانِ وَمُنْتَهَى الْعِلْمِ وَمَبْلَغَ الرِّضَا وَزِنَةَ الْعَرْشِ لَا مَلْجَاءَ

1...مجموع فیہ رسائل للحافظ ناصر الدین ص74

2... **तरजमा :** ऐ **अल्लाह** पाक ! इस चांद को हम पर बरकत, ईमान, सलामती और इस्लाम के साथ तुलूअ़ फ़रमा। मेरा और तेरा रब **अल्लाह** है।

(ترمذی ج5ص281حدیث3462، دار الفکر بیروت)

3... **तरजमा :** ऐ **अल्लाह** पाक ! इस को हमारे लिये अम्नो ईमान, सलामती व इस्लाम और अपनी रिज़ामन्दी वाला और शैतान से बचाने वाला बना।

(معجم اوسط ج4ص360حدیث6241، دار الکتب العلمیۃ بیروت)

وَلَا مَنْجَا مِنَ اللّٰهِ اِلَّا اِلَيْهِ، سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَدَدَ الشَّفْعِ وَالْوَتْرِ وَعَدَدَ كَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّآمَّاتِ كُلِّهَا اَسْاَلُهُ السَّلَامَةَ بِرَحْمَتِهٖ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ وَهُوَ حَسْبِيْ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ (1)''

पढ़ कर पानी पर दम कर के पी ले, तमाम तक्लीफ़ों और आफ़तों (calamities) से **अल्लाह** पाक की हिफ़ाज़त में रहेगा।(2)

यौमे फ़ारूक़े आ'ज़म यूं मनाइये

फ़र्स्ट मुहर्रमुल हराम जन्नती सहाबी अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की शहादत (Martyrdom) का दिन है, इस दिन आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के लिये ईसाले सवाब का एहतिमाम कीजिये नीज़ अमीरे अहले सुन्नत हज़रते मौलाना मुहम्मद इल्यास क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के रिसाले **''करामाते फ़ारूक़े आ'ज़म''** का मुतालआ कीजिये, अगर आप हज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की सीरत तफ़्सील से पढ़ना चाहते हैं तो मक्तबतुल मदीना की 1720 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब ''फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म'' हासिल कीजिये। (दा'वते इस्लामी की वेबसाइट www.dawateislamihind.net से इस किताब को पढ़ा जा सकता है, डाउन लोड (Download) और प्रिन्ट आउट (Print Out) भी किया जा सकता है।)

1... **तरजमा :** मीज़ान के भरने, इल्मे मुन्तहा, मब्लग़े रिज़ा और अ़र्श के वज़्न के बराबर **अल्लाह** की पाकी है। पनाह गाह और मक़ामे नजात **अल्लाह** ही की त़रफ़ से है। हर जुफ़्त व त़ाक़ और **अल्लाह** पाक के तमाम कामिल कलिमात के बराबर उस की पाकी है। मैं **अल्लाह** पाक से सलामती और रह़मत का सुवाल करता हूं और गुनाह से बचने की कुव्वत और नेकी करने की त़ाक़त **अल्लाह** ही की त़रफ़ से है और **अल्लाह** काफ़ी है और क्या ही अच्छा कारसाज़ है और क्या ही अच्छा वाली और क्या ही अच्छा मददगार है। **अल्लाह** पाक की रह़मत हो अपनी मख़्लूक़ में सब से बेहतर मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर, इन की आल पर और तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان पर।

2... मुरक़्क़ए कलीमी, स. 187, ह़ामिद एन्ड कम्पनी, लाहोर

शबे आ़शूरा में ग़ुस्ल कीजिये

आ़शूरा (या'नी दस मुह़र्रम) की रात आए तो ग़ुस्ल कीजिये क्यूं कि इस रात आबे ज़मज़म तमाम पानियों में शामिल कर दिया जाता है और इस रात ग़ुस्ल करने से पूरा साल बीमारियों से ह़िफ़ाज़त रहती है।[1]

यौमे आ़शूरा के आ'माल

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली जौज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : दस मुह़र्रम बहुत अ़ज़मत वाला दिन है लिहाज़ा मुनासिब है कि जिस क़दर मुम्किन हो अच्छे काम किये जाएं। भलाइयों के इन मौसिमों को ग़नीमत जानो और ग़फ़्लत (heedlessness) से बचो।[2] चुनान्चे येह नेक काम कीजिये : (1) यौमे आ़शूरा का रोज़ा रखिये और इस के साथ नवीं या ग्यारहवीं मुह़र्रमुल ह़राम का रोज़ा भी मिला लीजिये।[3] (2) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللهُ عَنْه का फ़रमान है : **आ़शूरा के दिन जो हज़ार मरतबा सूरए इख़्लास पढ़े तो उस की त़रफ़ रह़मान (अल्लाह पाक) नज़र फ़रमाएगा और जिस की त़रफ़ रह़मान नज़र फ़रमाए उसे कभी अ़ज़ाब नहीं देगा।**[4] (3) यौमे आ़शूरा ही को ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام की तौबा क़बूल हुई लिहाज़ा इस दिन तौबा व इस्तिग़्फ़ार कीजिये और बारगाहे इलाही से तौबा पर क़ाइम रहने की दुआ़ मांगिये।[5] (4) यौमे आ़शूरा को बिल ख़ुसूस इस्मिद सुरमा लगाइये इस की बरकत से आंखें नहीं दुखेंगी।

1...النور فی فضائل الایام والشھور ص123، دائرۃ شؤون الاسلامیہ دبئی

2...التبصرۃ لابن جوزی ج2 ص8، دار الکتب العلمیۃ بیروت

3...مسند امام احمد ج1 ص518 حدیث 2154 ماخوذاً

4...النور فی فضائل الایام والشھور ص124

5...لوامع الانوار ص259، دار ابن حزم بیروت

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जो शख़्स यौमे आ़शूरा इस्मिद सुरमा आंखों में लगाए तो उस की आंखें कभी भी न दुखेंगी।[1] (5) ज़ियारते क़ुबूर कीजिये। (6) (हो सके तो) ख़ौफ़े ख़ुदा से आंसू बहाइये।[2]

अगले पिछले तमाम गुनाहों की बख़्शिश

मक्की मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक बार दस मुहर्रमुल ह़राम को नमाज़े जुमुआ़ की अदाएगी के बा'द मस्जिदे नबवी में एक सुतून के क़रीब तशरीफ़ फ़रमा हो गए। सह़ाबी इब्ने सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه भी आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बराबर में बैठे थे। मुअज़्ज़िने रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने अज़ान देना शुरूअ़ की और जब उन्हों ने "اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ الله" कहा तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने अपने दोनों अंगूठों के नाख़ुनों (Nails) को अपनी दोनों आंखों पर रखा और कहा : "قُرَّةُ عَيْنِيْ بِكَ يَا رَسُوْلَ الله!"[3] जब ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल ह़बशी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه अज़ान दे चुके तो आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! जो शख़्स ऐसा करे जैसा तुम ने किया **अल्लाह** पाक उस के अगले पिछले तमाम गुनाह बख़्श देगा।"[4] ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ की इस अदा को अदा करते हुए न सिर्फ़ यौमे आ़शूरा को बल्कि जब भी नामे मुह़म्मद सुनें तो अंगूठे चूमने की आ़दत बनाइये।

रिज़्क़ में बरकत का बेहतरीन नुस्ख़ा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "जो दसवीं मुहर्रम को अपने बच्चों के ख़र्च में फ़राख़ी (या'नी ख़ुशह़ाली) करेगा तो **अल्लाह** पाक

1...شعب الایمان ج3ص367حدیث3797، دار الکتب العلمیۃ بیروت

2... मुरक़्क़ए कलीमी, स. 190 मुल्तक़त़न 3... **या रसूलल्लाह !** आप से मेरी आंखों की ठन्डक है।

4... تفسیر روح البیان ج7ص229ماخوذاً، دار احیاء التراث العربی بیروت

सारा साल उस को फ़राख़ी (Affluence) देगा।'' हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : हम ने इस हदीस का तजरिबा किया तो ऐसे ही पाया।[1]

हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : ''मुहर्रम की दसवीं तारीख़ को अपने बाल बच्चों, नोकर ख़ादिमों, फ़ुक़रा मसाकीन के लिये मुख़्तलिफ़ क़िस्म के खाने तय्यार करे तो اِنْ شَآءَاللهُ साल भर तक उन खानों में बरकत होगी, मुसल्मान आशूरा के दिन हलीम (खिचड़ा) पकाते हैं, इस का माख़ज़ येह हदीस है क्यूं कि हलीम (खिचड़े) में हर खाना होता है, गन्दुम, गोश्त और दालें चावल वग़ैरा तो اِنْ شَآءَاللهُ हलीम पकाने वाले के घर इन तमाम खानों में बरकत होगी।'' मज़ीद फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि आशूरा के दिन ख़ुद रोज़ा रखो और बच्चों को फ़ुक़रा को ख़ूब खिलाओ पिलाओ लिहाज़ा येह हदीस आशूरा के रोज़े के ख़िलाफ़ नहीं।[2]

यौमे आशूरा और वाक़िअए करबला

ऐ आशिक़ाने सहाबा व अहले बैत ! माहे मुहर्रमुल हराम हर साल हमें शुहदाए करबला और बिल ख़ुसूस नवासए रसूल, सय्यिदुश्शुहदा, इमामे आली मक़ाम हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْه की याद दिलाता है, क्यूं कि 10 मुहर्रमुल हराम इक्सठ (61) हिजरी को तारीख़े इस्लाम में हक़्क़ो बातिल (Right and wrong) के दरमियान एक अज़ीम मा'रिका (Battle) पेश आया जिसे **वाक़िअए करबला** के नाम से याद किया जाता है, इस में शुहदाए करबला رَضِیَ اللهُ عَنْهُم के इस्तिक़ामत भरे

1...مشکاۃ المصابیح ج1ص365حدیث1926، دار الکتب العلمیۃ بیروت

2... मिरआतुल मनाजीह, जि. 3, स. 115

अन्दाज़ ने तमाम अहले ह़क़ को बातिल के सामने डट जाने और ज़रूरत पड़ने पर दीने इस्लाम की ख़ातिर जान का नज़राना पेश करने का अ़ज़ीमुश्शान सबक़ दिया। अगर ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ यज़ीद की बैअ़त (Pledge allegiance) करते तो वोह तमाम लश्कर (Army) आप के क़दमों में होता, आप का एह़तिराम किया जाता, ख़ज़ानों के मुंह खोल दिये जाते और दौलते दुन्या क़दमों पर लुटा दी जाती मगर जिस का दिल दुन्या की मह़ब्बत से ख़ाली हो बल्कि ख़ुद दुन्या जिस के घर की ख़ादिमा हो वोह इस दुन्या के रंगो रूप पर क्या नज़र डालेगा। ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने राह़ते दुन्या के मुंह पर ठोकर मार दी और राहे ह़क़ में पहुंचने वाली मुसीबतों का ख़ुशदिली से इस्तिक़्बाल किया और इस क़दर आज़्माइशों के बा वुजूद यज़ीदे पलीद जैसे फ़ासिक़े मो'लिन (या'नी ए'लानिया गुनाह करने वाले) शख़्स की बैअ़त का ख़याल भी अपने मुबारक दिल में न आने दिया, अपना घर लुटाना और अपना ख़ून बहाना मन्ज़ूर फ़रमाया मगर इस्लाम की इ़ज़्ज़त पर ह़र्फ़ नहीं आने दिया, **ख़ुदा की क़सम !** मैदाने करबला में करबला वालों का इस्लाम की ख़ातिर अपनी जानों का नज़राना पेश करना, रहती दुन्या तक मुसल्मानों के लिये बहुत **बड़ा सबक़** है।

क़त्ले हुसैन अस्ल में मर्गे यज़ीद है इस्लाम ज़िन्दा होता है हर करबला के बा'द

काश ! हम भी अहले बैते अत़्हार की मह़ब्बतो उल्फ़त को दिल में बसाते हुए, इन की मुबारक सीरत पर अ़मल कर के दुन्या व आख़िरत को रोशन बनाएं और **अल्लाह** पाक की रिज़ा व ख़ुशनूदी ह़ासिल करें।

घर लुटाना जान देना कोई तुझ से सीख जाए जाने आ़लम हो फ़िदा ऐ ख़ानदाने अहले बैत
दौलते दीदार पाई पाक जानें बेच कर करबला में ख़ूब ही चमकी दुकाने अहले बैत[1]

1... ज़ौक़े ना'त, स. 100, मक्तबतुल मदीना

आईनए क़ियामत

बिरादरे आ'ला ह़ज़रत मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने वाक़िअ़ए करबला से मुतअ़ल्लिक़ एक किताब बनाम "**आईनए क़ियामत**" तह़रीर फ़रमाई है, इस किताब के बारे में आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मौलाना शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ साह़िब की किताब जो अ़रबी में है वोह या ह़सन मियां मर्हूम मेरे भाई की किताब "**आईनए क़ियामत**" में सह़ीह़ रिवायात हैं उन्हें सुनना चाहिये, बाक़ी ग़लत़ रिवायात के पढ़ने से न पढ़ना और न सुनना बेहतर है।[1]

नियाज़ किस चीज़ पर दिलवाएं ?

ह़ज़रते मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : माहे मुह़र्रम में दस दिनों तक ख़ुसूसन दसवीं को ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِىَ اللهُ عَنْه व दीगर शुहदाए करबला को ईसाले सवाब करते हैं कोई शरबत पर फ़ातिह़ा दिलाता है, कोई शीर बिरन्ज (चावलों की खीर) पर, कोई मिठाई पर, कोई रोटी गोश्त पर, जिस पर चाहो फ़ातिह़ा दिलाओ जाइज़ है, इन को जिस त़रह़ ईसाले सवाब करो मन्दूब (Good act) है। बा'ज़ जाहिलों में मश्हूर है कि मुह़र्रम में सिवाए शुहदाए करबला के दूसरों की फ़ातिह़ा न दिलाई जाए उन का येह ख़याल ग़लत़ है, जिस त़रह़ दूसरे दिनों में सब की फ़ातिह़ा हो सकती है, इन दिनों में भी हो सकती है।[2]

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : शीरीनी (Sweets) वग़ैरा पर ह़ज़राते शुहदाए किराम की नियाज़ देना बेशक बाइ़से अज्रो बरकात

1... मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 293, मक्तबतुल मदीना

2... बहारे शरीअ़त, जि. 3, ह़िस्सा : 16, मक्तबतुल मदीना

है और अ़शरए मुहर्रम शरीफ़ इस के लिये ज़ियादा मुनासिब ।[1]

शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ देहलवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का मा 'मूल

हज़रत शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुहद्दिसे देहलवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के घर साल में दो महाफ़िल हुवा करती थीं : (1) महफ़िले मीलाद (2) महफ़िले शहादते इमामे हुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْه । इसी दूसरी महफ़िल का ज़िक्र करते हुए फ़रमाते हैं : येह महफ़िल बरोज़ आ़शूरा या उस से एक दिन क़ब्ल होती है, (इस में) चार पांच सो आदमी बल्कि हज़ार आदमी जम्अ़ होते हैं और दुरूद शरीफ़ पढ़ते हैं । उस के बा'द जब फ़क़ीर आता है तो लोग बैठते हैं, हज़रते सय्यिदुना इमामे हसन व हुसैन के हदीस शरीफ़ में आने वाले फ़ज़ाइल बयान किये जाते हैं । फिर ख़त्मे कुरआने करीम किया जाता है और पन्ज आयह (पांच आयतें) पढ़ कर खाने की जो चीज़ मौजूद होती है उस पर फ़ातिहा दी जाती है ।[2]

अमीरे अहले सुन्नत की अहले बैत से महब्बत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अ़ज़ीम आ़शिक़े सहाबा व अहले बैत हैं बल्कि आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तो लाखों करोड़ों आ़शिक़ाने सहाबा व अहले बैत बना दिये हैं, इस की जीती जागती तस्वीर आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तस्नीफ़ात व मल्फ़ूज़ात हैं । अहले बैते अत्हार की महब्बतों और इन की सीरत पर मुश्तमिल अमीरे अहले सुन्नत के इन रसाइल का मुतालआ़ कीजिये : करामाते इमामे हुसैन, करबला का ख़ूनीं मन्ज़र, हुसैनी दूल्हा, करामाते शेरे ख़ुदा, इमामे हसन की 30 हिकायात ।

1... फ़तावा रज़विय्या, जि. 9, स. 598, रज़ा फ़ाउन्डेशन, लाहोर

2... फ़तावा अ़ज़ीज़ी, जि. 1, स. 104 ब तग़य्युरे क़लील, देहली

यौमे आ़शूरा को नज़्रो नियाज़ का एहतिमाम करने के साथ साथ वक़्त की क़ुरबानी दे कर शहीदान व असीराने करबला के ईसाले सवाब की निय्यत से 8, 9, 10 या 9, 10, 11 मुह़र्रमुल ह़राम को मदनी क़ाफ़िले में सफ़र भी करें, इस की ख़ूब ख़ूब बरकतें ह़ासिल होंगी, اِنْ شَآءَاللّٰه

हर सह़ाबिये नबी ! जन्नती जन्नती

सब सह़ाबियात भी जन्नती जन्नती

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	नए साल व महीने की दुआ़	9
ख़ैराते आ़शूरा की बरकात	1	तमाम तक्लीफ़ों और आफ़तों से ह़िफ़ाज़त	9
"मुह़र्रम" कहने की वज्ह	3	यौमे फ़ारूक़े आ'ज़म यूं मनाइये	10
मुह़र्रमुल ह़राम के 2 फ़ज़ाइल	3	शबे आ़शूरा में ग़ुस्ल कीजिये	11
मुह़र्रम के पहले अ़शरे की अ़ज़मत	4	यौमे आ़शूरा के आ'माल	11
यौमे आ़शूरा	4	अगले पिछले तमाम गुनाहों की बख़्शिश	12
यौमे आ़शूरा की मुबारक निस्बतें	4	रिज़्क़ में बरकत का बेहतरीन नुस्ख़ा	12
ईद का दिन	5	यौमे आ़शूरा और वाक़िअ़ए करबला	13
अ़ह्दे रिसालत और यौमे आ़शूरा	5	आईनए क़ियामत	15
आ़शूरा का रोज़ा फ़र्ज़ था	6	नियाज़ किस चीज़ पर दिलवाएं ?	15
एक दिन पहले या एक दिन बा'द	7	शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ देह्लवी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का मा'मूल	16
आ़शूरा का रोज़ा मग़्फ़िरत का सबब बन गया	7	अमीरे अहले सुन्नत की अहले बैत से मह़ब्बत	16
यौमे आ़शूरा का एह़तिराम जानवर भी करते हैं	7		
चांद की पहली रात की दुआ़	9		

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत के लिये ख़ुश ख़बरी !!!

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार** क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ का प्रोग्राम

"मदनी मुज़ाकरा"

फ़र्स्ट मुह़र्रमुल ह़राम से 10 मुह़र्रमुल ह़राम

रोज़ाना रात तक़रीबन दस बजे (Live) मदनी चेनल पर

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! मदनी मुज़ाकरों से अ़क़ाइदो आ'माल और ज़ाहिरो बात़िन की इस्लाह़ और इश्क़े रसूल की ला ज़वाल दौलत के साथ साथ शरई, त़िब्बी, तारीख़ी और तन्ज़ीमी मा'लूमात का ला जवाब ख़ज़ाना हाथ आता है।

मदनी मुज़ाकरा है शरीअ़त का ख़ज़ीना
अख़्लाक़ का तहज़ीब का त़रीक़त का ख़ज़ीना

फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा.....जारी रहेगा..... اِنْ شَآءَ اللّٰہ

M.R.P. ₹ 00/-

DAWAT-E-ISLAMI

Maktabatul Madina

Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372
Faizane Madina, Teen Koniya Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200
421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi
011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025*T&C Apply
feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net